

टिळक महाराष्ट्र विद्यापीठ, पुणे
संस्कृत विशारद (बी.ए.) – नियमित
परीक्षा : डिसेंबर - २०२३
सत्र ३ रे

विषय: किरातार्जुनीय (19R432)

दिनांक : ०६/१२/२०२३	गुण : ६०	वेल : दु. २.०० ते ४.३०
---------------------	----------	------------------------

सूचना : १) उजवीकडील अंक त्या प्रश्नांचे गुण दर्शवितात. २) सर्व प्रश्न अनिवार्य.

प्र. १. चतुर्णामनुवादं ससन्दर्भं लिखत। (२०)

- १) अवन्ध्यकोपस्य विहन्तुरापदां भवन्ति वशः स्वयमेव देहिनः।
अमर्षशून्यस्य जनस्य जन्तुना न जातहादेन च विद्विषादरः॥
- २) विहाय शान्तिं नृप धाम तत्पुनः प्रसीद सन्धेहि वधाय विद्विषाम्।
ब्रजन्ति शत्रूनवधूय निःस्पृहाः शमेन सिद्धिं मुनयो न भूभृत्॥
- ३) अपवर्जितविप्लवे शुचौ हृदयग्राहिणि मङ्गलास्पदे।
विमला तव विस्तरे गिरां मतिरादर्शं इवाभिटूष्यते॥
- ४) अपनेयमुदेतुमिच्छता तिमिरं रोषमयं धिया पुरः।
अविभिद्य निशाकृतं तमःप्रभया न अंशुमताष्युदीयते॥
- ५) न समयपरिक्षणं क्षमं ते निकृतिपरेषु परेषु भूरिधामः।
अरिषु हि विजयार्थिनः क्षितिशा विद्वति सोपाधि सन्धिदूषाणानि॥

प्र. २. टिप्पणीत्रयं लिखत। (१५)

- | | |
|----------------------|-----------------|
| १. वृकोदरः | २. वनेचरः |
| ३. भारवे: वृत्तयोजना | ४. चतसः विद्याः |

प्र. ३. अपि किरातार्जुनीयम् महाकाव्यम् अस्ति? सविस्तर लिखत। (१५)

अथवा

भारवे: राजनीतिविचारान् स्पष्टीकुरुत।

प्र. ४.अ) रूपपरिचय लिखत। (केवलं पञ्च) (०५)

- | | | |
|-----------|----------|------------|
| १. वृण्ते | २. हन्ति | ३. जुहुधि |
| ४. इषवः | ५. धिया | ६. सुमेरोः |

ब) सनाम समासविग्रहं लिखत। (केवलं पञ्च) (०५)

- | | | |
|---------------|------------|------------------|
| १. निःशेषम् | २. वनेचरः | ३. सौष्ठवौदार्ये |
| ४. गुणानुरागः | ५. दुराधयः | ६. आपत्ययोधिः |
